खण्ड – 2 : प्रमुख विचारक – 1

इकाई – 3 : विलियम वर्ड्सवर्थ

इकाई की रूपरेखा

2.3.0. उद्देश्य कथन
2.3.1. प्रस्तावना
2.3.2. विलियम वर्ड्सवर्थ : व्यक्ति परिचय
 2.3.2.1. व्यक्तित्व
 2.3.2.2. कृतियाँ
2.3.3. विलियम वर्ड्सवर्थ का काव्य चिन्तन
 2.3.3.1. कविता की परिभाषा
 2.3.3.2. काव्यभाषा का अर्थ व विकास
 2.3.3.3. काव्यभाषा की अवधारणा
2.3.4. विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य चिन्तन का अनुशीलन
2.3.5. सारांश
2.3.6. शब्दावली
2.3.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची
2.3.8. सम्बन्धित प्रश्न

2.3.0. उद्देश्य कथन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र पाठ्यचर्या के खण्ड-2 'प्रमुख विचारक-1' की यह तीसरी इकाई है। इस खण्ड की पहले दो इकाइयों में आपने क्रमश: अरस्तू और लोंजाइनस जैसे विचारकों के काव्यशास्त्रीय अवदानों का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। इसी कड़ी में प्रस्तुत इकाई विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य चिन्तन पर केन्द्रित है। उल्लेखनीय है कि पाश्चात्य साहित्य चिन्तन की परम्परा में विलियम वर्ड्सवर्थ की गणना स्वच्छंदतावाद के प्रवर्तकों में की जाती है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

2.3.0.1. काव्य की परिभाषा, काव्यभाषा का अर्थ व विकास तथा काव्य भाषा की अवधारणा के सन्दर्भ में विलियम वर्ड्सवर्थ के विचारों को जान सकेंगे।

2.3.0.2. विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्यभाषा विषयक स्थापनाओं का अनुशीलन कर सकेंगे।

2.3.0.3. विलियम वर्ड्सवर्थ के सैद्धान्तिक अवदान की विवेचना कर सकेंगे।

2.3.1. प्रस्तावना

पाश्चात्य काव्य चिन्तन की विकास परम्परा में सुप्रसिद्ध विचारक ड्राइडन ने अपने अन्तिम वर्षों में आगामी साहित्यिक विकास की दिशा लगभग सुनिश्चित कर दी थी । यह दिशा नवशास्त्रवाद या नवआभिजात्यवाद की ओर थी। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1970 ई. में ड्राइडन की मृत्यु और 'लिरिकल बैलेड्स' के प्रकाशन के बीच लगभग सौ वर्ष का अन्तराल है। उसमें नवशास्त्रवाद का वर्चस्व दिखाई देता है। इस आलोक में 'लिरिकल बैलेड्स' के माध्यम से विलियम वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज जैसे विचारकों ने अरस्तू-होरस के सैद्धान्तिक वर्चस्व को तोड़ा और तत्युगीन नई शक्तियों से प्रेरित नवीन रचनाशीलता को केन्द्र में रखकर काव्य और आलोचना को नई दृष्टि प्रदान की है। वस्तुतः किसी भी काव्य रचना का आधार समाज है। समाज काव्य को सामग्री देता है जिससे साहित्य का सृजन होता है। किन्तु कवि या लेखक उपलब्ध सामग्री का ऐसा संयोजन करता है जिससे समाज को गति मिलती है। वह युगीन सत्य को अभिव्यक्त करता ही है, भविष्य द्रष्टा के रूप में पथ को आलोकित भी करता है। समाज निरपेक्ष काव्य का कोई मूल्य नहीं होता। और, रचनाकार मानव जीवन की सतत धारा का कर्णधार होता है।

यही कारण है कि विलियम वर्ड्सवर्थ जैसे स्वच्छंदतावादी रचनाकारों ने अपने (काव्य) चिन्तन में एक नवीन यथार्थवाद का विकास किया है। उन्होंने न केवल निराशा और पलायनवादी प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया, अपितु आभिजात्यवादी मूल्यों पर आधारित अपने युग की समाज व्यवस्था की कटु आलोचना भी की है। वस्तुत: विलियम वर्ड्सवर्थ के विचार पाश्चात्य काव्य चिन्तन की एक महान् साहित्यिक घटना है, स्वच्छंदतावाद जिसकी सबसे सार्थक फलश्रुति है। कई शताब्दियों की बहुआयामी रचनाशीलता उनके काव्य चिन्तन के दायरे में आती है।

2.3.2. विलियम वर्ड्सवर्थ : व्यक्ति परिचय

विलियम वर्ड्सवर्थ अंग्रेजी साहित्य में एक सुप्रसिद्ध कवि के रूप में स्थापित हैं। उनमें एक सहज सौन्दर्यबोध और निरन्तर भाव प्रवणता थी। स्मरणीय है कि अंगेजी साहित्य में शेक्सपियर और मिल्टन के बाद तीसरे सबसे बड़े कवि के रूप में सुविख्यात हैं। सामन्तवाद के दमन और उत्पीड़न के प्रति विद्रोही होकर वे ग्राम्य जीवन और प्राकृतिक सौन्दर्य की ओर उन्मुख हुए थे। उनके काव्य चिन्तन में वस्तुतः शताब्दियों से अभिशप्त मनुष्यता के विराट अंश की आशाएँ, आकांक्षाएँ, उसके अपने सुख-दुःख ही मुख्यत: प्रतिबिम्बित हुए हैं।

2.3.2.1. व्यक्तित्व

विलियम वर्ड्सवर्थ का जन्म 1770 ई. में हुआ। बचपन से की कविताओं में उनकी विशेष रुचि थी। उन्होंने अपना काव्य जीवन सहज प्राकृतिक वातावरण का सान्निध्य प्राप्त करके ही आरम्भ किया था। बीस वर्ष की उम्र यानी वर्ष 1990 ई. में उन्होंने फ्रांस, इटली और आल्पस पर्वत की पैदल यात्रा की। फ्रांस की राज्यक्रान्ति

के परिणामों से वे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। क्योंकि, फ्रांसीसी राज्यक्रान्ति ने मानवमात्र की समानता की घोषणा की थी। इस तरह ऐतिहासिक परिस्थितियों के दबाव से वे एक नए आन्दोलन के सिद्धान्तकार बने।

2.3.2.2. कृतियाँ

अपने रचनात्मक दौर में विलियम वर्ड्सवर्थ की रचनाओं पर बेकन-लॉक-हार्टली की वैज्ञानिक परम्परा का गहरा असर था। अंग्रेजी साहित्य के स्वच्छंदतावादी कवियों में वे अत्यन्त उल्लेखनीय रचनाकार हैं। 'पोइटिकल स्केचेज' (1793) उनकी पहली काव्य पुस्तक है। कॉलरिज के साथ 'लिरिकल बैलेड्स' उनकी महत्त्वपूर्ण कृति है जिसका प्रकाशन वर्ष 1798 ई. में हुआ। 1815 ई. तक आते-आते इस महत्त्वपूर्ण कृति के चार संस्करण प्रकाशित हुए। स्मरणीय है कि 'लिरिकल बैलेड्स' की समस्त भूमिका 'एडवरटिजमेंट' नामक शीर्षक के अन्तर्गत अकेले विलियम वर्ड्सवर्थ ने ही लिखी थी। उनकी कुछ कविताएँ, खासकर प्रगीत, विश्व साहित्य की अनुपम निधि हैं। कालान्तर में उनके द्वारा लिखित 'प्रिफेस टू लिरिकल बैलेड्स' का अंग्रेजी आलोचना साहित्य में विशिष्ट स्थान है। प्रिफेस के प्रत्येक संस्करण में वर्ड्सवर्थ ने काव्य विषय और काव्य भाषा पर अपने मौलिक विचार प्रस्तुत करके परम्परागत आधार को जोरदार ढंग से खण्डित किया है। और, काव्य की परिभाषा, विषयवस्तु, प्रयोजन तथा भाषा पर उन्होंने अपने नवीन विचारों की स्थापना की है।

2.3.3. विलियम वर्ड्सवर्थ का काव्य चिन्तन

अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में ड्राइडन आदि कवियों की काव्य शैली रूढ़ और निरूपयोगी हो गई थी। इस आलोक में विलियम वर्ड्सवर्थ ने परम्परागत शैली का तीव्र व सार्थक विरोध किया है। तत्युगीन फ्रांस की राज्यक्रान्ति और अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध की यूरोपीय औद्योगिक क्रान्ति जैसी युगान्तकारी वैश्विक घटनाओं का उनके काव्य चिन्तन पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। विवेचनार्थ, आधुनिक युग में जिस प्रकार टी एस. एलियट और एजरा पाउण्ड ने बोलचाल की भाषा के प्रयोग का समर्थन किया, वैसे ही विलियम वर्ड्सवर्थ ने अपनी प्राकृतिक और स्वाभाविक भाषा शैली का समर्थन किया है। यही कारण है कि उन्होंने काव्यगत युक्तियों, मानवीकरण, वक्रोक्ति तथा पौराणिक दंतकथाओं, भावाभास आदि को काव्य के लिए उपयुक्त नहीं माना है। अट्ठारहवीं शती में नवआभिजात्यवादी युग में वस्तुतः भाषा के निम्न व उच्च दो रूप प्रचलन में थे। दैनिक जीवन की भाषा को निम्न माना जाता था जबकि दूसरी उच्च भाषा कृत्रिम, बोझिल और आडम्बरपूर्ण हो गई थी। विलियम वर्ड्सवर्थ ने कृत्रिम भाषा का परित्याग करके सरल भाषा के प्रयोग पर बल दिया है।

काव्यशास्त्रीय चिन्तन के निहितार्थ, अपने प्रसिद्ध आमुख में विलियम वर्ड्सवर्थ ने मुख्यत: दो विषयों पर विस्तार से विवेचन किया है – पहला, काव्यभाषा और दूसरा, कविता की परिभाषा। इस परिप्रेक्ष्य में उन्होंने जहाँ एक ओर कविता के उद्भव, स्वरूप और प्रयोजन पर व्यापक चिन्तन प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी ओर कविता और छन्द, कवि का स्वरूप, कविता और विज्ञान जैसे विषयों पर भी अपनी संक्षिप्त मान्यताएँ अभिव्यक्त की हैं।

2.3.3.1. कविता की परिभाषा

प्रारम्भिक पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय चिन्तन में काव्य की प्रकृति और स्वरूप पर विचार करते समय घटनाओं और स्थितियों पर यानी कथानक पर विशेष जोर देने की परम्परा की जानकारी मिलती है। जैसा कि अरस्तू ने कहा है कि कथानक त्रासदी की आत्मा है। कथानक का सम्बन्ध संरचना से है और संरचना वैचारिकता से सम्बन्धित है।

अस्तु, आरम्भिक चिन्तन में तर्क और नियमों को विशेष माना गया और कविता को इसी सन्दर्भ में देखने की परम्परा विकसित हुई। लेकिन अठ्ठारहवीं शती के अन्त तक आते-आते काव्य विवेचन की परम्परागत शैली का लगभग अवसान हो चुका था। विलियम वर्ड्सवर्थ जैसे स्वच्छंदतावादी विचारकों ने कविता को 'तीव्र मनोवेगों का सहज उच्छलन' कहकर काव्य में नियम व तर्क की बजाय भाव और स्वत:स्फूर्त सर्जनात्मकता पर बल दिया। 'लिरिकल बैलेड्स' में संगृहीत कविताओं का वैशिष्ट्य रेखांकित करते हुए उन्होंने लिखा है कि "एक अन्य कारण भी है जो इन कविताओं को आज की लोकप्रिय कविताओं से अलग करता है और वह यह कि उनमें जो भाव व्यक्त किए गए हैं वे स्थिति व कार्य व्यापार को महत्ता प्रदान करते हैं, स्थिति और कार्य व्यापार भाव को नहीं"।

विवेचनार्थ, अपने आमुख में विलियम वर्ड्सवर्थ कविता को परिभाषित करने का उल्लेखनीय प्रयास किया है। उनकी दृष्टि में हमारे भावों का सतत अन्त:प्रवाह हमारे विचारों से संशोधित और निर्देशित होता रहता है और ये विचार भी वस्तुत: अतीत की हमारी सम्पूर्ण भावनाओं के प्रतिनिधि हैं। इसलिए वे काव्य में भाव और विचार के सामंजस्य की महत्ता स्थापित करते हैं। कविता को परिभाषित करते हुए उन्होंने यह स्थापना व्यक्त किया है कि "कविता तीव्र मनोवेगों का सहज उच्छल है। शान्ति के क्षणों में भाव के पुन:स्मरण से इसका उदय होता है। भाव के अनुचिन्तन के क्रम में, एक विशेष प्रकार की अभिक्रिया द्वारा, प्रशान्तता धीरे-धीरे तिरोहित हो जाती है और पुन: वैसे ही भावदीप मनोदशा उत्पन्न हो जाती है जैसे कि आरम्भ में हुई थी। यह मन:स्थिति कुछ देर तक बनी रहती है। इसी मनोदशा में सामान्यतः सफल रचना की शुरुआत होती है और ऐसी ही मनोदशा में यह प्रक्रिया जारी रहती है। किन्तु भाव चाहे जिस प्रकार के हों और चाहे जिन कारणों से उत्पन्न हों, वे आनन्द के विभिन्न रूपों से संचालित रहते हैं और उनका वर्णन करते समय मन भी कुल मिलाकर आनन्दानुभूति की स्थिति में रहता है"। इस प्रकार विलियम वर्ड्सवर्थ कविता के स्वरूप की विवेचना के अनुक्रम में काव्य रचना प्रक्रिया का भी उल्लेख करते हैं। उनके अनुसार काव्य रचना प्रक्रिया के तीन चरण हैं – पहला, भावों का सहज उच्छलन, दूसरा शान्ति के क्षणों में उसका पुन: स्मरण और तीसरा, कविता में उसकी अभिव्यक्ति।

कविता को भावों का सहज उच्छलन मानकर वर्ड्सवर्थ ने कविता में भावों को प्राथमिक महत्त्व दिया है। चूँकि, नव्यशास्त्र में तर्क और शास्त्रीय नियमों को ही सब कुछ मान लिया गया था, इसलिए उन्होंने अपने काव्य विवेचन में एक प्रकार से नव्यशास्त्रवादी सिद्धान्त का खण्डन प्रस्तुत करते हुए 'स्वत:स्फूर्त सर्जनात्मकता' को प्रतिष्ठित किया है। उनकी प्रबल धारणा है कि उत्कट भावानुभूति के लिए साहित्यकार में भावुकता का गुण

अपेक्षित है और इस गुण के अभाव में कोई भी व्यक्ति कवि नहीं हो सकता है। वस्तुतः काव्य रचना की प्रक्रिया के तीनों में चरणों में 'भावानुभूति' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सोपान है, क्योंकि यदि शुरू में कवि के मन में भाव का उदय नहीं होगा तो शान्ति के क्षणों में न तो उसका पुन:स्मरण सम्भव है और न ही काव्य के रूप में उसकी अभिव्यक्ति।

यह निर्विवाद तथ्य है कि कविता का जन्म 'भावानुभूति' से होता है। लेकिन, अच्छी कविता केवल जन्म ही नहीं लेती, अपितु वह कवि से अलग होकर सहृदय समाज में सम्प्रेषित भी होती है। इस सन्दर्भ में चूँकि भाव विशिष्ट होता है और विचार सामान्य, इसलिए भाव के साथ विचार का संश्लेषण भी आवश्यक होता है। इस आधार पर विलियम वर्ड्सवर्थ ने यह मत स्थापित किया है कि रचना प्रक्रिया के पहले (मनोवेगों के सहज उच्छलन) और दूसरे (शान्ति के क्षणों में भावों के पुन:स्मरण) चरणों के बीच एक अन्तराल होनी चाहिए। यह अन्तराल भी एक प्रकार से रचना प्रक्रिया का ही अंग है। कहना सही होगा कि अन्तराल के दौरान कवि एक प्रकार के चयन या संग्रह-त्याग की सहज प्रक्रिया से होकर गुजरता है। इसमें चयन की दिशा सामान्यतया सार्वभौमिकता की ओर होती है। और, इस पूरी अवधि (अन्तराल) में कवि चिन्तन मनन द्वारा अपनी वैयक्तिक भावानुभूति को निर्वैयक्तिक बनाता है।

ध्यातव्य है कि मनोवेगों का सहज उच्छलन एक अचेतन प्रक्रिया है जबकि शान्ति के क्षणों में भावों का पुन:स्मरण सचेतन। सतही तौर पर इन दोनों कथनों में एक प्रकार का अन्तर्विरोध दिखाई देता है, लेकिन यह अन्तर्विरोध वास्तविक न होकर प्रतीयमान है। क्योंकि, ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इतना ही नहीं, भाव के पुन: स्मरण और उसके अनुचिन्तन की प्रक्रिया में पुन: वैसी ही भावदीप्त मनोदशा उत्पन्न होती है जैसी आरम्भ में हुई थी। मूल मनोदशा और इस मनोदशा में अन्तर यह है कि इसमें भावानुभूति के नितान्त वैयक्तिक और असंगत पहलू हटा दिए जाते हैं। इसी मनोदशा में सफल रचना का निर्माण होता है तथा सृजन का वास्तविक क्षण भी यही है। क्योंकि, सृजन के इस क्षण में साहित्यकार आनन्द अनुभूति की स्थिति में रहता है तथा इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि चित्रित भाव सुखात्मक है या दु:खात्मक।

हालाँकि, काव्य प्रयोजन के सन्दर्भ में विलियम वर्ड्सवर्थ के चिन्तन में एक नैतिक धारा परिलक्षित होती है। उनके अनुसार आनन्द तो काव्य का मुख्य प्रयोजन है, लेकिन उसे लोकमंगल का साधक भी होना चाहिए। काव्य के महत्त्व का निर्धारण इस आधार पर होना चाहिए कि पाठक के उपर उसका क्या प्रभाव पड़ता है। कविता के लिए यह अपेक्षित है कि वह हमें उचित भावों और सही किस्म की जागरूकता की दिशा में अभिप्रेरित करे। अस्तु, समाज में कवि की भूमिका को लेकर विलियम वर्ड्सवर्थ बहुत सचेत हैं। उनकी दृष्टि में कवि की कतिपय विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है; यथा –

(i) कवि अन्य लोगों की तुलना में अधिक संवेदनशील होता है।

(ii) मानव प्रकृति व स्वाभाव की उसकी जानकारी अधिक गम्भीर होती है और उसकी आत्मा अधिक विशाल होती है।

(iii) अपने अन्त:मन में विद्यमान जीवन रस में वह अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक आनन्द का अनुभव करता है।

(iv) वह अप्रस्तुत वस्तुओं में से ऐसे प्रभावित होता है जैसे कि वे प्रस्तुत हों।

(v) उसका भाषा पर ऐसा अधिकार होता है कि वह जो कुछ सोचता और अनुभव करता है उसे भलीभाँति अभिव्यक्त भी कर सकता है।

काव्य प्रतिपाद्य के आलोक में विलियम वर्ड्सवर्थ का स्पष्ट मानना है कि कवि केवल कवियों के लिए ही नहीं लिखते हैं, अपितु मानव मात्र हेतु लिखते हैं। काव्य का यही सर्वव्यापी आकर्षण है, खासियत है जो उसे विज्ञान से पृथक् करता है। वैसे कवि और वैज्ञानिक दोनों का ही लक्ष्य ज्ञान है और दोनों का ही ज्ञान आनन्द रूप है। किन्तु कवि का ज्ञान जहाँ हमारे अस्तित्व का अनिवार्य अंग है और हमारी स्वाभाविक विरासत प्रतीत होता है, वहीं वैज्ञानिक का ज्ञान वैयक्तिक उपलब्धि है। इस परिप्रेक्ष्य में यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि विलियम वर्ड्सवर्थ सामान्य तौर पर विज्ञान की सशर्त उपेक्षा नहीं करते थे। उनके अनुसार यदि विज्ञान वैयक्तिक लाभ की वस्तु न रहे और मानवता की सेवा करे तो वह अनुकरणीय है। इस प्रकार वे एक ऐसे युग की परिकल्पना करते हैं जब विज्ञान भी सामान्यतः मानव जीवन को प्रभावित करेगा और तब ज्ञान की इस शाखा के प्रति भी कवि उदासीन नहीं रहेगा। क्योंकि, कविता सम्पूर्ण ज्ञान का आदि और अन्त है और यह मानव मन के समान ही अमर है।

2.3.3.2. काव्यभाषा का अर्थ व विकास

अठ्ठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में एडिसन, डॉ॰ जॉनसन, ग्रे आदि जैसे विचारकों ने यह अभियान चलाया कि कविता की भाषा विशिष्ट होनी चाहिए। उन्होंने यह विचार अभिव्यक्त किया कि कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका केवल या विशेष रूप से कविता में प्रयोग किया जाता है। सही अर्थों में काव्यभाषा यानी ‘पोइटिक डिक्शन’ का विकास इसी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप हुआ। और, इसी प्रवृत्ति के अन्तर्गत कुछ शब्दों को ही काव्यात्मक मान लिया गया और यह मत स्थापित किया गया कि कवि परम्परा में ऐसे शब्दों को चुन-चुनकर उनका प्रयोग किया जाना चाहिए। ‘काव्यभाषा’ पदबन्ध का सर्वप्रथम प्रयोग करते हुए प्रसिद्ध कवि पोप ने ‘इलियड’ के आमुख में लिखा है कि “हम उसे (होमर) काव्यभाषा का जनक मानते हैं। वह पहला व्यक्ति था जिसने मनुष्यों को देवों की भाषा का ज्ञान कराया”। इस प्रकार काव्यभाषा का दिव्य होने के कारण उसका बल आलंकारिकता और अभिव्यक्ति कौशल पर था। यही कारण है कि विलियम वर्ड्सवर्थ जैसे कवि नव्यशास्त्रवादी दौर की कृत्रिम और आडम्बरपूर्ण ‘काव्यभाषा’ का सार्थक व तार्किक खण्डन प्रस्तुत किया है। अपनी पूरी काव्य चिन्तन की प्रक्रिया के केन्द्र में उनका अभिजात वर्ग और अभिजातवर्गीय संस्कृति के प्रति विरोध सहज ही परिलक्षित होता है।

विलियम वर्ड्सवर्थ के पूर्ववर्ती नव्यशास्त्रवाद साहित्यिक अनुभव की संकीर्णता पर आधारित था। वस्तुतः पुनर्जागरणकालीन इटली और सत्रहवीं शती के फ्रांस में अरस्तूवाद का तीव्र प्रचलन था और तत्युगीन विचारक काव्य के प्राचीन सैद्धान्तिक मान्यताओं को कालजयी मानते थे। इतना ही नहीं, मानव स्वभाव के

विविधताओं की उपेक्षा करके उन्होंने यह मत स्थापित किया कि मानव प्रकृति हर जगह एक जैसी है, क्योंकि वे यह समझ नहीं सके कि सार्वभौम मानव एक विशिष्ट देशकाल व वातावरण से भी जुड़ा हुआ होता है।

2.3.3.3. काव्यभाषा की अवधारणा

विलियम वर्ड्सवर्थ ने काव्यभाषा चिन्तन के आलोक में सबसे पहले भाषा की कृत्रिमता के स्थान पर सरलता को शैलीगत सौन्दर्य माना है। उनकी दृढ़ मान्यता है कि शब्द अपने आप में काव्यात्मक या अकाव्यात्मक नहीं होते, अपितु भाषा में प्रयोग के आधार पर वे अपना स्वरूप निर्धारित करते हैं। वस्तुतः उनके समय में अलंकृत भाषा के यांत्रिक अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत प्रबल थी। काव्यभाषा में कृत्रिमता का समावेश और मनुष्य की यथार्थ भाषा से उसके अलगाव की प्रक्रिया आदि जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर उन्होंने विस्तार से चर्चा की है। उदाहरण के तौर पर 'लिरिकल बैलेड्स' के तृतीय संस्करण में विलियम वर्ड्सवर्थ ने लिखा है कि "सभी देशों के आरम्भिक कवियों ने सामान्यतः यथार्थ की घटनाओं से प्रेरित होकर काव्य की रचना की थी। उन्होंने जो कुछ लिखा वह साधारण मनुष्यों के रूप में और एकदम स्वाभाविक ढंग से। चूँकि उनकी अनुभूति और भाव प्रबल थे, इसलिए उनकी भाषा भी प्रभावपूर्ण ओर अलंकृत हो गई। इस भाषा का प्रभाव देखकर परवर्ती कवियों और यशलोलुप जनों ने, वैसे भावों से अनुप्राणित हुए बिना ही, वही प्रभाव उत्पन्न करना चाहा। फल यह हुआ कि उन अलंकारों का यांत्रिक प्रयोग ही हो पाया। कभी-कभी तो यह प्रयोग उचित भी हुआ, किन्तु ऐसे भावों और विचारों के लिए उनका प्रयोग किया गया जिनसे उनका कोई सहज सम्बन्ध नहीं था। इस प्रकार अनजाने ही एक ऐसी भाषा निर्मित हो गई जो हर हालत में मनुष्यों की यथार्थ भाषा से तत्त्वत: भिन्न थी"। इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह कृत्रिम भाषा बोझिल और आडम्बरपूर्ण होती गई। वह सहज-सरल न रही और उसकी भावोद्दीपन क्षमता एकदम समाप्त हो गई। यही मूल कारण है कि विलियम वर्ड्सवर्थ जैसे विचारकों ने इस नवआभिजात्यवादी काव्यभाषा का त्याग कर प्राचीन कवियों की भाषायी परम्परा फिर से अपनाने का आग्रह किया है। विलियम वर्ड्सवर्थ की काव्यभाषा सम्बन्धी मान्यताओं के तीन आधार हैं –

(i) काव्यभाषा में ग्रामीण जनों की दैनिक बोलचाल की भाषा को आधार बनाने की वकालत करते हुए उन्होंने ग्रामीण जीवन का समर्थन किया है। उनका मानना है कि ग्रामीण अपनी निम्न स्थिति के कारण सामाजिक गर्व से मुक्त होकर सरल स्वाभाविक अभिव्यक्ति करते हैं। उनकी वाणी में सत्यता तथा भावों में सरलता होती है।

(ii) विलियम वर्ड्सवर्थ की मान्यता रही है कि गद्य-पद्य में या गद्य और छंदोबद्ध रचना में कोई तात्त्विक भेद नहीं हो सकता। उनकी भाषा सम्बन्धी इस अतिवादी मान्यता का वस्तुतः परम्परा तथा वास्तविकता के साथ स्पष्ट विरोध है। गद्य-पद्य का अन्तर केवल छन्द के कारण नहीं होता, अपितु वाक्य विन्यास, पद चयन आदि की कारण से भी होता है।

(iii) विलियम वर्ड्सवर्थ कविता को छन्दमयी मानते हैं। उनका विचार है कि छन्द के कारण कवि को एक विशेष प्रकार की भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। यही कारण है कि वे भाषा की तरह छन्द के चुनाव पर भी बल देते हैं। उनकी मान्यता है कि छन्द मनमाना न होकर उपयुक्त, नियमबद्ध

और सुनिश्चित होना चाहिए। यद्यपि वे छन्द को कविता के लिए अनिवार्य नहीं मानते, तथापि छन्द की महत्ता, शक्ति और प्रभाव को स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि में छन्द से विषय सम, संतुलित और आनन्दप्रद बन जाता है। वस्तुतः उन्होंने कविता के लिए छन्द को अनिवार्य नमानकर कविता का एक गुण स्वीकार किया है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

2.3.4. विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य चिन्तन का अनुशीलन

विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य चिन्तन, खासकर भाषा विषयक स्थापनाओं से उनके युग के साहित्यकार और आलोचक सहमत नहीं थे। उदाहरण के तौर पर सुप्रसिद्ध आलोचक कॉलरिज ने 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' में वर्ड्सवर्थ की मान्यताओं की तीखी आलोचना प्रस्तुत की है। 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' के अध्याय 17 से लेकर अध्याय 20 तक के चार अध्यायों में कॉलरिज ने एक-एक मान्यता पर अत्यन्त विस्तार से विचार किया है जो कि अत्यन्त उल्लेखनीय हैं। इसके अन्तर्गत वर्ड्सवर्थ की काव्यभाषा विषयक मान्यताओं की आलोचना के अधिकांश पहलू आ जाते हैं; यथा –

1) विलियम वर्ड्सवर्थ ने ग्रामीण जीवन से सम्बद्ध विषयों के लिए ग्रामीण भाषा के प्रयोग को वांछनीय स्वीकार किया था। कॉलरिज ने वर्ड्सवर्थ के ग्रामीण भाषा विषयक इस अवधारणा को अनुपयुक्त बताते हुए यह स्पष्ट किया है कि काव्यभाषा भावों और अनुभूतियों का सम्प्रेषण करने में सक्षम होनी चाहिए, किन्तु ग्रामीण भाषा की शब्दावली अपर्याप्त होती है तथा उसमें व्यापक, सूक्ष्म व विविध अनुभूतियों का सम्प्रेषण सम्भव नहीं है। साथ-ही-साथ ग्रामीण भाषा का वस्तु ज्ञान भी सीमित होता है। यद्यपि कॉलरिज के विचार तर्कसंगत हैं, फिर भी विलियम वर्ड्सवर्थ भाषा के दुराग्राही नहीं थे और उनका कथन केवल 'लिरिकल बैलेड्स' की कविताओं के परिप्रेक्ष्य में ही था। उन्होंने 'प्रिफेस' में 'यथासम्भव' कहकर ग्रामीण भाषा की उपादेयता मात्र स्वीकार की है।

2) वर्ड्सवर्थ 'मनुष्यों की वास्तविक भाषा' की बात करते हैं। कॉलरिज इस विचार के प्रति अपनी असहमति जाहिर करते हुए यह तर्कविधान किया है कि प्रत्येक मनुष्य की भाषा उसके ज्ञान, क्रिया, संवेदना के अनुसार अलग-अलग होती है। शिक्षित और अशिक्षित दोनों को ही अपनी-अपनी भाषा की आवश्यकता होती है। वस्तुतः मनुष्य की भाषा को वैयक्तिक, सामाजिक तथा शब्दों व मुहावरों की विशेषताएँ नियंत्रित करती हैं। इसलिए काव्य भाषा में स्वाभाविक भाषा का प्रयोग अनुचित है। हालाँकि, इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि विलियम वर्ड्सवर्थ ने सीमित उद्देश्य व परिप्रेक्ष्य में ही अपना उपर्युक्त विचार प्रस्तुत किया था।

3) विलियम वर्ड्सवर्थ ने ग्रामीण भाषा के दोषों को दूर करके उसे काव्य में प्रयुक्त करने की बात स्वीकार की है जिससे अरुचि और जुगुप्सा पैदा करने वाले तत्त्व भाषा में रहें। इस आलोक में कॉलरिज का कथन है कि जब भाषा को ग्रामीण दोषों से मुक्त करके परिष्कृत बना दिया, तब वह भाषा ग्रामीण कैसे हो सकती है। लेकिन, इस सम्बन्ध में तो यह माना ही जा सकता है कि वर्ड्सवर्थ ने परिष्कृत

ग्रामीण शब्दावली की बात की है तथा उन्होंने ऐसा करके एक तरह से ग्रामीण भाषा के प्रति कवियों का रुझान पैदा किया था।

4) विलियम वर्ड्सवर्थ की 'तीव्र अनुभूति की दशा' वाले विचार से भी कॉलरिज सहमत नहीं हैं। इस सन्दर्भ में कॉलरिज ने स्पष्ट किया है कि भाव की उष्मा विचारों या बिम्बों में चाहे जो भी अभिनव सम्बन्ध स्थापित करे या सत्य अथवा अनुभूति का जो भी साधारणीकरण करे, उसके सम्प्रेषक शब्द तो बोलचाल में पहले से ही विद्यमान रहते हैं, असाधारण उत्तेजना से वे समुद्रित हो जाते हैं। वस्तुतः यहाँ भी वर्ड्सर्थ की भावनाओं और विचारों की उपेक्षा दिखाई देती है। उन्होंने यह नहीं कहा था कि भाव की उत्तेजना और अनुभूति की तीव्रता शब्दाडम्बर को प्रभावित करती हैं। वर्ड्सवर्थ ने हालाँकि इतना अवश्य माना कि अनुभूति की तीव्रता की दशा में प्रयुक्त शब्द शक्तिशाली और प्रभावशाली होते हैं।

5) विलियम वर्ड्सवर्थ द्वारा प्रयुक्त शब्द 'एशेंसल' का विश्लेषण करते हुए कॉलरिज ने यह मत प्रकट किया है कि "मैं अपने प्रमाण में प्रत्येक देश और प्रत्येक युग के सर्वश्रेष्ठ कवियों के प्रयोगों की ओर ध्यान आकृष्ट करता हूँ कि अनिवार्य शब्द के प्रत्येक अर्थ में गद्य और छंदोबद्ध रचना की भाषा में सचमुच अनिवार्य भेद हो सकता है और होना चाहिए"। विवेचात्मक सन्दर्भ में हम यदि विलियम वर्ड्सवर्थ की गद्य-पद्य की भाषा में अभेद की स्थापना पर गम्भीरता से विचार करते है तो यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि उनका कथन 'सत्य' के बहुत निकट है। उदाहरण के तौर पर बाणभट्ट के गद्य और कालिदास के पद्य द्रष्टव्य हैं। जैसा कि संस्कृत में एक उक्ति है कि 'गद्यं क्वीनां निकष: वदन्ति' यानी गद्य कवियों की कसौटी है। इस प्रकार विलियम वर्ड्सवर्थ उत्तम गद्य की भाषा के लिए ऐसा मत प्रकट करते हैं।

2.3.5. सारांश

समवेतत: विलियम वर्ड्सवर्थ ने अपने काव्यशास्त्रीय चिन्तन के अनुक्रम में प्राचीन सद्यान्यताओं को ग्रहण करते हुए उन्हें नया स्वरूप प्रदान करने की सार्थक चेष्टा करते हैं। नव्यशास्त्रियों की भाँति उन्होंने काव्य में प्रकृति का अनुकरण नवीन अर्थों में स्वीकार किया है। यही कारण है कि वर्ड्सवर्थ ने 'कल्पनाशक्ति' पर विशेष बल दिया है जिसके द्वारा कवि ब्रह्माण्ड की एकता का अनुभव करता है। इतना ही नहीं, उन्होंने शैली की शुद्धता तथा अलंकृत भाषा के स्थान पर अन्त:स्फूर्त भावों से सहज उच्छलन को बल देकर रोमानी आलोचना का प्रवर्तन किया है। कुल मिलाकर उन्होंने काव्य चिन्तन व निर्माण की प्रक्रिया के आधार पर काव्य का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया तथा कविता में निहित भाव तत्त्व की प्रतिष्ठा कर काव्य में 'सत्यम्', 'शिवम्' और 'सुन्दरम्' पर बल दिया है।

2.3.6. शब्दावली

कथानक	:	कथावस्तु
कृत्रिम	:	बनावटी, अप्राकृतिक
अभिजात	:	उच्च वर्ग
संकीर्णता	:	तुच्छता
अभिनव	:	नया

2.3.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची

1. जैन, निर्मला, काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. गुप्त, शान्ति स्वरूप, पाश्चात्य आलोचना के काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. श्रीवास्तव, अर्चना, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. सिंह, विजय बहादुर, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
6. भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.

2.3.8. सम्बन्धित प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विलियम वर्ड्सवर्थ की काव्यभाषा विषयक स्थापनाओं का उल्लेख कीजिए।
2. 'तीव्र अनुभूति की दशा' से विलियम वर्ड्सवर्थ का क्या अभिप्राय है ?
3. "ग्रामीण भाषा का वस्तु विधान सीमित होता है"। टिप्पणी कीजिए।
4. "कवि अन्य व्यक्तियों की तुलना में अधिक संवेदनशील होता है"। समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "काव्य में भाव और विचार के सामंजस्य ही महत्ता स्थापित करते हैं"। इस कथन के आलोक में विलियम वर्ड्सवर्थ के मतों का परीक्षण कीजिए।
2. "विलियम वर्ड्सवर्थ द्वारा प्रस्तुत 'प्रिफेस' में महाकवि की अन्त:दृष्टि है"। स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विलियम वर्ड्सवर्थ का जन्म किस वर्ष हुआ ?
   (a) 1770
   (b) 1780
   (c) 1790
   (d) 1800

2. 'लिरिकल बैलेड्स' का प्रकाशन कब हुआ ?

   (a) 1797

   (b) 1798

   (c) 1799

   (d) इनमें से कोई नहीं

3. "कविता तीव्र मनोवेगों का सहज उच्छल है"। यह मत किस विचारक का है ?

   (a) प्लेटो

   (b) अरस्तू

   (c) लोंजाइनस

   (d) विलियम वर्ड्सवर्थ

4. विलियम वर्ड्सवर्थ ने काव्य रचना प्रक्रिया के कितने चरणों का उल्लेख किया है ?

   (a) दो

   (b) तीन

   (c) चार

   (d) पाँच

5. विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्यभाषा सम्बन्धी विचारों के आलोचक हैं –

   (a) कॉलरिज

   (b) रिचर्ड्स

   (c) एलियट

   (d) उपर्युक्त सभी

उपयोगी वेबसाइट्स :

01. http://epgp.inflibnet.ac.in/ahl.php?csrno=18
02. http://www.hindisamay.com/
03. http://hindinest.com/
04. http://www.dli.ernet.in/
05. http://www.archive.org

❖❖❖